

न्यायालय:- न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी, चन्देरी जिला-अशोकनगर  
(पीठासीन अधिकारी:-जफर इकबाल)

फाइलिंग नंबर 235103004642012

दांडिक प्रकरण क.-153/12

संस्थापित दिनांक-04.05.12

मध्यप्रदेश राज्य द्वारा :- आरक्षी केन्द्र चन्देरी जिला अशोकनगर।	
	अभियोजन
विरुद्ध	
01-गनपत पुत्र हरदयाल कुशवाह आयु 28 वर्ष निवासी ग्राम इमलिया, चंदेरी जिला अशोकनगर	
	आरोपी
राज्य द्वारा	:- श्री सुदीप शर्मा, ए.डी.पी.ओ.।
आरोपी द्वारा	:- श्री चौरसिया अधिवक्ता।

—: निर्णय :-

(आज दिनांक 31.10.2017 को घोषित)

01- आरक्षी केन्द्र चन्देरी, जिला अशोकनगर द्वारा आरोपी के विरुद्ध यह अभियोग पत्र अंतर्गत भा.द.वि. की धारा 379, एवं धारा 113/194 मोटरयान अधिनियम के विचारण हेतु प्रस्तुत किया गया।

02- प्रकरण में आरोपी की गिरफ्तारी व पहचान स्वीकृत तथ्य है।

03— अभियोजन की कहानी संक्षेप में इस प्रकार है कि मामले के फरियादी सुरेशचंद पटेरिया ने दिनांक 03.05.12 को आरक्षी केंद्र चंदेरी में इस आशय की रिपोर्ट लेखबद्ध कराई कि दिनांक 03.05.12 को समय 14:10 बजे विक्रमपुर तिराहे पर ट्रक क्रमांक एम पी 09 के सी 7331 को रोककर चैक किया गया तो आरोपी के पास खनिज पत्थर ले जाने की कोई रायल्टी न होना पाया गया था तथा आरोपी खनिज पत्थर चोरी कर अवैधरूप से उत्खनन कर रहा था और साथ ही ट्रक ओवरलोडेड होना पाया गया था। फरियादी की रिपोर्ट के आधार पर आरोपी के विरुद्ध अपराध क्रमांक 153/12 के अंतर्गत भादवि की धारा 379, एवं 194 113/194 मोटरयान अधिनियम के अंतर्गत प्रथम सूचना रिपोर्ट लेखबद्ध की गई एवं विवेचना उपरांत अभियोग पत्र न्यायालय में प्रस्तुत किया गया।

04— प्रकरण में आरोपी के विरुद्ध भा.द.वि. की धारा 379, एवं 113/194 मोटरयान अधिनियम के अंतर्गत अपराध रचित कर विचारण प्रारंभ किया गया। प्रकरण में आई साक्ष्य की प्रकृति को देखते हुए आरोपी का धारा 313 द.प्र.सं. के अंतर्गत परीक्षण किया गया।

05— प्रकरण के निराकरण में निम्न विचारणीय प्रश्न हैं :-

1. क्या आरोपी ने दिनांक 03.05.12 को समय 14:10 बजे या उसके लगभग थाना चंदेरी में स्थित विक्रमपुर तिराहे पर ट्रक क्रमांक एमपी 09 के सी 6339, ट्रक क्रमांक एम पी 09 के सी 7331 से खनिज पत्थर अवैधरूप से उत्खनन कर बिना राँयल्टी दिये ले जाकर चोरी कारित की, जो कि धारा 379 भादवि के अंतर्गत दण्डनीय है, और इस न्यायालय के प्रसंज्ञान में है ?
2. आपने उक्त दिनांक समय व स्थान पर उक्त ट्रक में मोटरयान अधिनियम की धारा 113 के उपबंधों का उल्लंघन किया, जो 194 (3)

मोटरयान अधिनियम के उपबंधों का उल्लंघन किया, जो धारा 113/194 (3) मोटरयान अधिनियम के अंतर्गत दंडनीय है, और इस न्यायालय क प्रसंज्ञान में है ?

**--:: सकारण निष्कर्ष ::--**

06— प्रकरण में अभिलेख पर आई हुई साक्ष्य आपस में संशक्त एवं अंतर्वलित है। अतः ऐसी स्थिति में साक्ष्य की पुनरावृत्ति के दोषनिवारणार्थ विचारणीय प्रश्न क्रमांक 01 एवं 02 का निराकरण एक साथ किया जा रहा है। अभियोजन ने अपने पक्ष के समर्थन में अ.सा. 01 अब्दुल हमीद खां, अ.सा.2 सुरेशचंद पटैरिया, अ.सा.3 राहुल चतुर्वेदी, अ.सा.5 रामकिशोर, अ.सा.4 प्रवीण साहू, अ.सा.6 पी सी वाजपेयी की मौखिक साक्ष्य अभिलेख पर प्रस्तुत की गई है।

07— अभियोजन साक्षी 02 सुरेशचंद पटैरिया ने अपने कथन में बताया है कि वह दिनांक 03.05.12 को थाना चंदेरी में थाना प्रभारी के पद पर पदस्थ था। उक्त साक्षी के अनुसार उसने उक्त दिनांक को विक्रमपुर पर टक क्रमांक एम पी 09 के सी 7331 को रोककर चैक किया गया था तथा उसमें अवैध खनिज पत्थर भरे पाये गये थे। इसके संबंध में आरोपी गनपत के पास कोई दस्तावेज नहीं थे। उक्त साक्षी के अनुसार उक्त ट्रक ओवरलोडेड होने एवं उसमें चोरी का अवैध खनिज होने से प्र0पी02 के अनुसार ट्रक को जप्त किया गया था जिसके ए से ए भाग पर उसने अपने हस्ताक्षर होना बताया है। उक्त साक्षी के अनुसार उसने आरोपी को प्र0पी03 के अनुसार गिरफ्तार किया था तथा रिपोर्ट प्र0पी04 तैयार की थी जिसके ए से ए भाग पर उसने अपने हस्ताक्षर होना बताया है। उक्त साक्षी के अनुसार उसके साथ 3-4 लोग गये थे। उक्त साक्षी ने इस बात से इंकार किया है कि प्र0डी01 का रोजनामचा गलत है। उक्त साक्षी ने इस बात से भी इंकार किया है कि उसने कोई ट्रक जप्त नहीं किया है। उक्त साक्षी के अनुसार नक्सा मौका प्र0डी02 उसकी निशादेही पर बनाया गया था। उक्त साक्षी ने इस बात को स्वीकार किया है कि ट्रक की कार्यवाही खनिज विभाग द्वारा की गई थी।

08— अ.सा.1 अब्दुल हमीद ने अपने कथन में बताया है कि दिनांक 03.05.12 को टी आई साहव एव अन्य के साथ विक्रमपुर तिराहे पर गश्त हेतु गये थे जहां पर उक्त ट्रक को चैक किया गया था जिसमें आरोपी अवैधरूप से पत्थर भरकर ले जा रहा था और आरोपी के पास उसकी कोई रायल्टी नहीं थी। उक्त साक्षी के अनुसार आरोपी ट्रक में अवैधरूप से चोरी का पत्थर भरकर ले गया था तथा आरोपी से ट्रक जप्त किया गया था। अ.सा.5 रामकिशोर ने अपने कथन में बताया है कि वह भी घटना दिनांक को विक्रमपुर चौकी क्षेत्र में टी आई पटेरिया के साथ गया था। उक्त साक्षी के अनुसार आरोपी ने ट्रक में रखे पत्थर के उत्खनन एवं परिवहन के संबंध में कोई दस्तावेज न होना बताया था और तब आरोपी को गिरफ्तार कर ट्रक उससे जप्त किया था।

09— अ.सा.6 पी सी वाजपेयी ने अपने कथन में बताया है कि उनके द्वारा प्रकरण में नक्सा मौका प्र0डी02 तैयार किया गया था जिसके ए से ए भाग पर उसने अपने हस्ताक्षर होना बताया है। उक्त साक्षी के अनुसार उसने साक्षीगण के कथन लेखवद्ध किये थे। उक्त साक्षी ने इस बात से इंकार किया है कि उसने थाने में खड़े ट्रक का प्रकरण बना दिया था। अ.सा.4 प्रवीण साहू पक्षद्रोही हो गया है। उक्त साक्षी के अनुसार उसके समक्ष कोई जप्ती एवं गिरफ्तारी की कार्यवाही नहीं हुई है। उक्त साक्षी ने प्र0पी02 जप्ती पंचनामा एवं प्र0पी03 गिरफ्तारी पंचनामा पर अपने हस्ताक्षर होने से इंकार किया है। अ.सा.3 राहुल चतुर्वेदी ने अपने कथन में बताया है कि वह आरोपी को नहीं जानता है। उक्त साक्षी के अनुसार प्र0पी02 जप्ती पंचनामा एवं प्र0पी03 गिरफ्तारी पंचनामा पर उसके हस्ताक्षर हैं। उक्त साक्षी के अनुसार उसके सामने वाहन चालक से कोई दस्तावेज नहीं मिले थे तथा उसे यह बताया था कि ट्रक को ओवरलोडिंग के कारण पकड़ा है।

10— अभियोजन की ओर से जो साक्ष्य अभिलेख पर प्रस्तुत की गई है उसके अवलोकन से प्रकट होता है कि मामले के फरियादी अ.सा.2 ने स्पष्टरूप से अपने कथन में बताया है कि उक्त घटना दिनांक को आरोपी का ट्रक रोककर चैक किया गया था

जिसमें अवैधरूप से खनिज जप्त किया गया था तथा उक्त ट्रक ओवरलोडेड भी था। उक्त तथ्य का अनुसर्मथन अ.सा.1, अ.सा.5 की साक्ष्य से हो रहा है। अ.सा.1 एवं अ.सा. 05 ने अपने कथन में स्पष्टरूप से बताया है कि घटना दिनांक को आरोपी के पास से ओवरलोडेड ट्रक जप्त किया गया था जिसमें अवैधरूप से उत्खनन के पत्थर रखे गये थे। प्रकरण में जप्ती पंचनामा प्र0पी02 के साक्षी अ.सा.3 ने अपने कथन में बताया है कि उक्त घटना दिनांक को आरोपी से उक्त ट्रक जप्त किया गया था। इस प्रकार प्रकरण में जप्ती पंचनामा प्र0पी02 की कार्यवाही प्रमाणित हो रही है। तथा अ.सा.3 की साक्ष्य से यह प्रमाणित हो रहा है कि आरोपी से ट्रक इसलिए जप्त किया गया था क्योंकि उसमें अवैध खनिज पत्थर था तथा जिसके संबंध में वाहन चालक के पास कोई दस्तावेज नहीं थे।

11— प्रकरण में अभियोजन की ओर से जो साक्ष्य अभिलेख पर प्रस्तुत की गई है उसके अवलोकन से यह कहीं प्रकट नहीं होता है कि आरोपी को मामले में झूठा फसाया गया है। अभियोजन साक्षीगण की साक्ष्य अखण्डनीय रही है तथा सभी महत्वपूर्ण साक्षीगण की साक्ष्य में ऐसा कोई विरोधाभास अभिलेख पर नहीं आया है जिसके आधार पर यह निष्कर्ष दिया जा सके कि अभियोजन द्वारा झूठा मामला बनाया गया है। बचाव पक्ष का यह तर्क कि सभी साक्षीगण पुलिस के साक्षीगण है तथा उनपर विश्वास करना समीचीन प्रतीत नहीं होता है क्योंकि अभिलेख पर आई हुई साक्ष्य से ऐसा कहीं प्रकट नहीं होता है कि उक्त साक्षीगण झूठ बोल रहे हैं या उनके द्वारा जानबूझकर झूठी कार्यवाही की गई है। आरोपी की ओर से जो बचाव के रूप में दस्तावेज अभिलेख पर प्रस्तुत किये गये हैं उनमें जिला कलेक्टर के आदेश दिनांक 08.05.12 एवं पंचनामा दिनांक 03.05.12 के अवलोकन से प्रकट हो रहा है कि जिला कलेक्टर द्वारा यह पाया गया है कि प्रकरण में जप्तशुदा ट्रक का अवैध परिवहन किया गया है। इस प्रकार आरोपी द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों से भी यह प्रमाणित हो रहा है कि आरोपी द्वारा अवैध परिवहन किया गया है। अभियोजन द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य से यह प्रमाणित हो रहा है कि उक्त घटना दिनांक को आरोपी द्वारा उक्त ट्रक में बिना रॉयल्टी के खनिज पत्थर भर

कर चोरी कारित की गई। जहां तक ट्रक के ओवरलोडेड होने का प्रश्न है तो इस संबंध में अभियोजन द्वारा ऐसा कोई दस्तावेज अभिलेख पर प्रस्तुत नहीं किया गया है जिससे यह प्रमाणित हो सके कि प्रकरण में जप्तशुदा ट्रक ओवरलोडेड था। प्रकरण में जप्तशुदा ट्रक में कितना लोड था तथा वह मात्रा से कितना अधिक था इसके संबंध में अभियोजन द्वारा कोई साक्ष्य अभिलेख पर प्रस्तुत नहीं की गई है। अभियोजन द्वारा जो मौखिक साक्ष्य अभिलेख पर प्रस्तुत की गई है, उनमें साक्षीगण ने मात्र यह कथन किया है कि जप्तशुदा ट्रक ओवरलोडेड था किंतु साक्षीगण ने अपने कथन में यह नहीं बताया है कि उक्त ट्रक कितना ओवरलोडेड था और न ही अभियोजन द्वारा ऐसा कोई दस्तावेज अभिलेख पर प्रस्तुत किया गया है जिसके आधार पर यह निष्कर्ष दिया जा सके कि उक्त ट्रक ओवरलोडेड था।

12— उपरोक्त समग्र विवेचन के प्रकाश में यह निष्कर्ष दिया जाता है कि अभियोजन अपना मामला प्रमाणित करने में सफल रहा है। परिणामतः आरोपी को भादवि की धारा 379 के आरोप में सिद्धदोष पाते हुए दोषसिद्ध किया जाता है तथा आरोपी को धारा 113/194 मोटरयान अधिनियम के आरोप से दोषमुक्त किया जाता है।

13— आरोपी को न्यायिक अभिरक्षा में लिया गया। आरोपी एवं उनके अधिवक्ता को दण्ड के प्रश्न पर सुनने के लिए निर्णय थोड़ी देर के लिए स्थगित किया गया।

(जफर इकबाल)  
न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी  
चन्देरी जिला—अशोकनगर

#### पुनश्च:—

14— आरोपी के विद्वान अधिवक्ता श्री आलोक चौरसिया का निवेदन है कि उक्त

अपराध आरोपी का प्रथम अपराध है और उनका कोई पूर्व आपराधिक रिकार्ड नहीं है। अतः उनका निवेदन है कि आरोपी को परिवीक्षा का लाभ देकर छोड़ दिया जावे। प्रकरण में स्पष्ट है कि आरोपी द्वारा उक्त अपराध कारित किया गया है तथा शासन के नियमों का उल्लंघन किया गया है। इस प्रकार प्रस्तुत प्रकरण गंभीर प्रकृति का है। अतः उपरोक्त तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए यदि आरोपी को परिवीक्षा का लाभ दिया जाता है तो उसका गलत संदेश समाज में जाने की संभावना है। अतः ऐसी स्थिति में आरोपी को परिवीक्षा अधिनियम की धारा 3 एवं 4 का लाभ दिया जाना समीचीन प्रतीत नहीं होता।

15— जहां तक दण्ड का प्रश्न है तो निश्चित रूप से आरोपी को ऐसे दंडादेश से दंडित करना उचित होगा जो कि उन्हें भविष्य में ऐसे अपराध से रोके और साथ ही उनके लिए शिक्षाप्रद हो। आरोपी को ऐसे दण्डादेश से दंडित करना उचित होगा जो कि उन्हें न केवल विधिक प्रक्रिया के प्रति गंभीर करे, बल्कि उन्हें यह भी बोध हो कि यदि किसी के द्वारा सार्वजनिक संपत्ति की चोरी कारित की जाती है तो ऐसी दशा में उन्हें गंभीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। अतः उपरोक्त विवेचन के प्रकाश में आरोपी को भा. द.वि. की धारा 379 के अपराध में 01 वर्ष के साधारण कारावास एवं 500 रुपये के अर्थदंड से दंडित किया जाता है। अर्थदंड के व्यतिक्रम में आरोपी 15 दिवस का अतिरिक्त साधारण कारावास भोगेंगे।

16— आरोपी के जमानत मुचलके निरस्त किए जाते हैं।

17— प्रकरण में जप्तशुदा सम्पत्ति ट्रक पूर्व से सुपुदर्गी पर है अतः सुपुदर्गीनामा निरस्त समझा जावे तथा जप्तशुदा पत्थर खनिज विभाग को वापिस किया जावे।

18— आरोपी अनुसंधान एवं विचारण के दौरान न्यायिक अभिरक्षा संबंधी धारा 428 द.प्र.स. का प्रमाण पत्र बनाया जावे।

19— आरोपी का सजा वारंट तैयार किया जावे।

निर्णय पृथक से टंकित कर विधिवत  
हस्ताक्षरित व दिनांकित किया गया।

मेरे बोलने पर टंकित किया गया।

(जफर इकबाल)  
न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी  
चंदेरी जिला अशोकनगर (म.प्र.)

(जफर इकबाल)  
न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी  
चंदेरी जिला अशोकनगर (म.प्र.)